



VISION IAS

www.visionias.in

P168

International Relations

सामान्य अध्ययन



णमो आयरियाणं

PlusPramesh eLib

www.pluspramesh.in



VISIONIAS

www.visionias.in

Classroom Study Material

अंतर्राष्ट्रीय संबंध

01. पृष्ठभूमि और सिंहावलोकन

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

विषय सूची

0. भारत: अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध	3
1. भारत के विदेश संबंध: भारत की विदेश नीति का विकास	4
1.1. विदेश नीति एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को समझना	4
1.2. निर्धारक: भारत की विदेश नीति को आकार प्रदान करने वाले तत्व और कारक	4
2. भारत की विदेश नीति का विकास	5
2.1. 1947-1962: अंतर्राष्ट्रवादी, आदर्शवादी और गुटनिरपेक्ष भारत	5
2.1.1. पंचशील	6
2.1.2. चीन के साथ असफलता: 1962	7
2.1.3. कोलंबो सम्मेलन तथा गुट-निरपेक्ष आंदोलन की सीमाएँ	8
2.1.4. गुट-निरपेक्ष आंदोलन का एक संक्षिप्त विवरण	8
2.2. 1962-1991: आत्मनिर्भरता या स्वावलंबन दृष्टिकोण का दौर	9
2.2.1. चीनी परमाणु परीक्षण तथा उसके पश्चात्	10
2.2.2. निरंतरता के साथ परिवर्तन	10
2.2.3. शिमला समझौता	11
2.3. 1991 और उसके बाद: "व्यावहारिक" विदेशी नीति का युग	13
2.3.1. एक नए युग का सूत्रपात	14
3. कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न	16
3.1. गुट-निरपेक्षता: विचार की प्रासंगिकता और आन्दोलन	16
3.2. NAM की अप्रासंगिकता के सन्दर्भ में तर्क	17
3.2.1. NAM और गुट-निरपेक्षता के पक्ष में तर्क	17
3.2.2. एक समकालीन मूल्यांकन	18
4. अनुपूरक पठनीय विषय	20
4.1. भारत की गुटनिरपेक्ष नीति	20
4.2. गुट-निरपेक्षता के कारण	21
4.3. गुट-निरपेक्ष आंदोलन	23

0. भारत: अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध

(India: International Relations)



विषय प्रवेश: सिविल सेवा के प्रारंभिक, मुख्य तथा साक्षात्कार तीनों चरणों में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को पर्याप्त महत्त्व दिया गया है। परीक्षा के संदर्भ में, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के बारे में ज्ञान की महत्ता विश्व के साथ भारत के पारस्परिक संबंधों से स्थापित की जाती है अर्थात् वे कारक एवं कारण जो इसे अर्थात् विश्व के साथ भारत के पारस्परिक संबंधों एवं इसके परिणामों को आकार प्रदान करते हैं एवं प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। भारत की विदेश नीति एवं विश्व के साथ इसके संबंधों को समझने का आदर्श तरीका इसके स्रोतों, निर्धारकों, उद्देश्यों, उपकरणों, विधियों, बाधाओं, कारकों, तत्वों, और इसके विकास को समझना है। इस प्रकार, इस सन्दर्भ में अंतर्राष्ट्रीय संबंध को भारत के संबंधों के रूप में समझा जाना चाहिए। ये संबंध भारत की विदेश नीति की प्रमुख विषय वस्तु हैं।

इसमें मोटे तौर पर निम्नलिखित विषयों को समाविष्ट किया गया है:

- **भारत की विदेश नीति:** निर्धारक तत्व, विकास, उपलब्धियाँ, चुनौतियाँ और महत्वपूर्ण प्रश्न।
- **पड़ोसी देश:** बांग्लादेश, भूटान, नेपाल, श्रीलंका, मालदीव, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, सार्क समूह के देश।
- **विस्तारित पड़ोस:** दक्षिण-पूर्व एशिया (आसियान समूह के देश, म्यांमार, वियतनाम, सिंगापुर); पश्चिम एशिया (खाड़ी सहयोग परिषद: GCC), ईरान, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात); पूर्व एशिया और उससे आगे (जापान, दक्षिण कोरिया, ऑस्ट्रेलिया, प्रशांत महासागर-हिन्द-प्रशांत, भारत-प्रशांत द्वीप देशों के लिए फोरम (Forum for India Pacific Island Countries-FIPIC); हिंद महासागर (मॉरीशस, हिंद महासागर तटीय क्षेत्रीय सहयोग संघ (Indian Ocean Rim Association for Regional Cooperation-IORA-ARC))।
- **वैश्विक संबंध - महत्वपूर्ण शक्तियाँ:** चीन, सं.रा. अमेरिका, रूस, यूरोपीय संघ, फ्रांस, जर्मनी और यूनाइटेड किंगडम।
- **क्षेत्रीय संबंध:** अफ्रीका, लैटिन अमेरिका (ब्राज़ील/मर्कोसर)।
- **बहुपक्षीय संगठन**
- **डायस्पोरा**
- **अंतर्राष्ट्रीय संबंध में प्रमुख मुद्दे**

आगे आने वाले अध्यायों में हम भारत की विदेश नीति एवं उससे अंतर्ग्रथित विषयों पर विस्तारपूर्वक चर्चा करेंगे।

1. भारत के विदेश संबंध: भारत की विदेश नीति का विकास

(India's Relations: Evolution of India's Foreign Policy)



1.1. विदेश नीति एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को समझना

(Understanding Foreign Policy And International Relations)

विदेश नीति वैश्विक घटनाओं से संबंधित है। यदि आप राष्ट्र की कल्पना एक व्यक्ति के रूप में करते हैं तो विदेश नीति के विषय में आपको व्यक्ति द्वारा अपने आसपास के वातावरण से सम्बन्ध रखने एवं संचालित होने के रूप में विचार करना होगा। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति पहचान, स्व-परिभाषा एवं स्व-हितों के एक समुच्चय के माध्यम से संचालित होता है और संबंधों (परिवार, मित्रों, प्रतिस्पर्धियों, शत्रुओं आदि) के एक जाल में उलझा हुआ होता है। व्यक्ति की कुछ इच्छाएँ और लक्ष्य होते हैं। इस प्रकार, अपनी क्षमताओं के आधार पर कोई व्यक्ति जीवन पर्यन्त अपने लक्ष्यों और इच्छाओं को प्राप्त करने के लिए अपने संबंध बनाने और उन्हें आकार देने में लगा रहता है। किसी व्यक्ति के लिए ये लक्ष्य और इच्छाएँ प्रायः सुरक्षा, समृद्धि और आत्म-विकास से संबंधित होती हैं।

संप्रभु राष्ट्रों के मामले में इन लक्ष्यों और इच्छाओं को **राष्ट्रीय हित** कहा जा सकता है। अपने सटीक रूप में राष्ट्रीय हित समय-समय पर परिवर्तित होते रह सकते हैं, लेकिन हमेशा इसके मूल में **सुरक्षा** (सैन्य तैयारी, आंतरिक और बाह्य सुरक्षा), **समृद्धि** (आर्थिक कल्याण जैसे कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, व्यापार, निर्धनता उन्मूलन आदि) और **राष्ट्र का दर्जा (प्रस्थिति)** (वर्तमान विश्व व्यवस्था में राजनीतिक स्थिति जैसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की सदस्यता) होते हैं। विदेश नीति, इन्हीं हितों की अभिव्यक्ति एवं उन्हें प्राप्त करने की रूपरेखा है। जे. बंदोपाध्याय के अनुसार, यह अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में उद्देश्यों एवं माध्यमों का चुनाव करने की प्रक्रिया होती है। बहुत सरल शब्दों में कहें तो विदेश नीति, अन्य राष्ट्रों के साथ संबंध बनाने और उसे बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय प्रोटोकॉल है। इस प्रकार, भारत की विदेश नीति ऐसे विश्व में राष्ट्रीय हितों को परिभाषित, अभिव्यक्त और प्राप्त करने का प्रयास करती है जहाँ ये हित कई प्रकार से राष्ट्र की सीमाओं के बाहर स्थित तत्वों और कारकों पर निर्भर होते हैं।

1.2. निर्धारक: भारत की विदेश नीति को आकार प्रदान करने वाले तत्व और कारक

(Determinants: Actors and Factors Shaping India's Foreign Policy)

किसी भी राष्ट्र की विदेश नीति एवं साथ ही इसकी सफलता या असफलता कई कारकों से निर्धारित होती है। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

- **इतिहास:** राजनीतिक परंपरा और दार्शनिक आधार क्योंकि भारत के मामले में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व एवं गैर-आक्रामकता को इसके इतिहास और संस्कृति के साथ-साथ राजनीतिक परंपरा से जोड़ा जा सकता है।
- **भूगोल:** स्थान और संसाधन - भू-राजनीति और भू-रणनीति: भारत में कई नदियाँ, राष्ट्रों की सीमाओं से घेरे विस्तारित होने वाली हैं अर्थात् भारत सहित कई पड़ोसी राष्ट्रों से होकर भी बहती हैं, उदाहरण के लिए गंगा, ब्रह्मपुत्र, एवं तीस्ता इत्यादि। हिमालय और हिंद महासागर दोनों ही भारत की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।



- **आर्थिक विकास:** किसी देश के आर्थिक विकास की आवश्यकताएँ एवं आर्थिक विकास की अवस्था उस देश की विदेश नीति और इनसे सम्बंधित विकल्पों में माध्यमों एवं उद्देश्यों दोनों दृष्टियों से योगदान करती हैं।
- **घरेलू वातावरण:** इसमें देश में उपस्थित विभिन्न संस्थाएँ, राजनीतिक वातावरण और राष्ट्रीय हितों पर आम सहमति, आवश्यकताएँ, महत्वाकांक्षाएँ एवं क्षमताएँ, नेतृत्व तथा नौकरशाही इत्यादि शामिल हैं।
- **अंतर्राष्ट्रीय वातावरण:** युद्ध, शांति और स्थिरता अर्थात् एक शांतिपूर्ण वाह्य वातावरण आर्थिक वृद्धि और विकास में सहायक होता है।

विदेश नीति के उद्देश्यों की प्राप्ति के साधनों के रूप में राजनयिक, आर्थिक और सैन्य साधनों को रखा जा सकता है। विगत कई वर्षों में भारत की विदेश नीति में हुए विकास को दृष्टिगत रखते हुए उपर्युक्त विमर्श के महत्व को पहचाना जा सकता है।

2. भारत की विदेश नीति का विकास

(Evolution of India's Foreign Policy)

2.1. 1947-1962: अंतर्राष्ट्रवादी, आदर्शवादी और गुटनिरपेक्ष भारत

(1947-1962: Internationalist, Idealist And Non-Aligned India)

स्वतंत्र भारत की विदेश नीति- ब्रिटिश शासन के विरुद्ध राष्ट्रीय आंदोलन की विरासत, द्वितीय विश्व युद्ध के उपरान्त की घटनाओं, घरेलू आवश्यकताओं एवं महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू जैसे व्यक्तित्वों आदि कई कारकों का सम्मिलित परिणाम थी। यहाँ तक कि भारतीय संविधान ने अनुच्छेद 51 (राज्य की नीति के निदेशक तत्व) के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा का संवर्द्धन करने हेतु एक प्रावधान सम्मिलित किया, जिसके अनुसार राज्य निम्नलिखित का प्रयास करेगा:

- (a) अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा की अभिवृद्धि का;
- (b) राष्ट्रों के बीच न्यायसंगत और सम्मानपूर्ण संबंधों को बनाए रखने का;
- (c) संगठित लोगों के एक दूसरे से व्यवहारों में अंतर्राष्ट्रीय विधि और संधियों के प्रति आदर बढ़ाने का; और
- (d) अंतर्राष्ट्रीय विवादों को मध्यस्थों द्वारा निपटारे के लिए प्रोत्साहन देने का।

स्वतंत्र भारत की विदेश नीति के आरंभिक वर्षों की एक महत्वपूर्ण विशेषता प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का रचनात्मक प्रभाव था जिसने आने वाले वर्षों पर दीर्घस्थायी प्रभाव छोड़ा एवं इसके विशिष्ट स्वरूप को एक दिशा प्रदान की। नेहरू जी की दृष्टि में इतिहास, आकार और क्षमता को देखते हुए भारत की विशेष प्रस्थिति (विश्व व्यवस्था में राजनीतिक स्थिति) थी। दो महाशक्तियों संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के मध्य वर्चस्व की राजनीति वाले शीत युद्ध के युग में यह अन्तर्राष्ट्रवाद, अफ्रीकी-एशियाई एकजुटता, उपनिवेशवाद विरोधी एवं गुटनिरपेक्षता को निर्दिष्ट करने वाली विदेश नीति थी।

भारत के स्वतंत्र होने से पहले ही नई दिल्ली में 23 मार्च से 2 अप्रैल 1947 को एशियाई संबंध सम्मेलन (Asian relations Conference) आयोजित किया गया। नेहरू जी के अनुसार "हम एक युग के अंत और इतिहास की एक नई अवधि की दहलीज पर खड़े हैं... निष्क्रियता के लम्बे अंतराल के बाद, एशिया, विश्व मामलों में अचानक पुनः महत्वपूर्ण हो गया है"



पाकिस्तान के साथ जूनागढ़ विवाद के शांतिपूर्ण समाधान के लिए जनमत-संग्रह का सुझाव सबसे पहले भारत ने दिया था। पुनः भारत ने 1947 में कश्मीर की स्थिति का समाधान करने के लिए इसी प्रकार का प्रस्ताव दिया। दिसंबर 1947 में कश्मीर में पाकिस्तान की आक्रामकता को संयुक्त राष्ट्र में ले जाने पर, संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठन में अपना विश्वास व्यक्त किये जाने को कई लोग भारत के नेतृत्व की ओर से की गई त्रुटि के रूप में देखते हैं। जे. बंदोपाध्याय के अनुसार, “कश्मीर के प्रति अपनी नीति में आदर्शवाद और यथार्थवाद दोनों का समन्वय करने के नेहरू के प्रयास ने कश्मीर कूटनीति के कतिपय पहलुओं को प्रभावित किया और यदि किसी अन्य व्यक्ति द्वारा इस मुद्दे को सम्बोधित किया गया होता तो संभवतः इसका स्वरूप भिन्न रहा होता”। हालाँकि, राजीव सीकरी के अनुसार, “1948 में जब जम्मू-कश्मीर की परिस्थितियाँ बिगड़ती जा रहीं थीं तब नेहरू पाकिस्तान के साथ युद्ध के लिए तैयार थे लेकिन उनके ब्रिटिश सेना प्रमुख ने उनका प्रस्ताव अस्वीकृत कर दिया। भारत के ब्रिटिश गवर्नर जनरल के दबाव में उन्होंने कश्मीर समस्या को संयुक्त राष्ट्र में प्रस्तुत किया।”

फिर भी, संयुक्त राष्ट्र में उनके प्रारंभिक अनुभव ने भारत की विदेश नीति में पश्चिमी विश्व के प्रति संदेह को और भी अधिक सुदृढ़ किया। इसका परिणाम, एशिया और अफ्रीका के नव स्वतंत्र राष्ट्रों को साथ लेकर चलने वाले एवं तत्कालीन वर्चस्व की राजनीति से समान दूरी बनाए रखने वाला मार्ग (गुटनिरपेक्ष सिद्धांत) निर्धारित करने के प्रयास के रूप में सामने आया।

इस चरण में भारत की विदेश नीति की तीन प्रमुख विशेषताएँ थीं। पहली, भारत ने बहुपक्षीय संस्थाओं और विशेष रूप से संयुक्त राष्ट्र शांति अभियानों में अहम भूमिका निभाई। दूसरी, यह गुटनिरपेक्ष आंदोलन के अहम प्रस्तावक के रूप में भी उभरा। तीसरा, गुटनिरपेक्ष आंदोलन के नेता के रूप में इसने उपनिवेशों को समाप्त कर राजनैतिक स्वतंत्रता की दिशा में भी अहम योगदान दिया। और यह अभिलक्षण उस समय भारत की अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी निम्नलिखित रूप में दृष्टिगत होती है :

- कनाडा और पोलैंड के साथ वियतनाम में इंटरनेशनल कंट्रोल कमीशन (1954),
- कोरिया में न्यूट्रल नेशंस रिपैट्रिएशन कमीशन (1952-54)
- बेल्जियन कांगो में संयुक्त राष्ट्र शांति बल (1960-1964)

इस चरण में भारत की सक्रियता निःशस्त्रीकरण, विशेष रूप से परमाणु हथियार संबंधी निःशस्त्रीकरण के मंच पर भी प्रदर्शित हुई। परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि (Nuclear Test Ban Treaty) के प्रारंभिक प्रस्तावकों में से एक के रूप में, 1952 में भारत ने आयरलैंड के साथ परमाणु परीक्षणों पर वैश्विक प्रतिबंध लगाने का प्रस्ताव पेश किया।

2.1.1. पंचशील

(Panchsheel)

इस अवधि में भारत ने चीन के साथ शांतिपूर्ण संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए पंचशील संधि को

और भी स्पष्ट हुआ, जिन्हें चीन और भारत के बीच 1954 में की गई पंचशील संधि के रूप में जाना जाता है। ये सिद्धांत “चीन के तिब्बत क्षेत्र और भारत के मध्य व्यापार और मेल-जोल (आवागमन) पर समझौते” की प्रस्तावना में निरूपित किए गए थे, जिस पर पीकिंग में 29 अप्रैल, 1954 को हस्ताक्षर किए गए थे। इस समझौते ने पंचशील के निम्न पांच सिद्धांतों को अभिव्यक्त किया:

1. एक-दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और प्रभुसत्ता के लिए पारस्परिक सम्मान।
2. पारस्परिक गैर-आक्रामकता।



3. एक-दूसरे के आंतरिक मामलों में पारस्परिक अहस्तक्षेप।
4. पारस्परिक लाभ के लिए समानता और सहयोग।
5. शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व।

विदेश नीति का अंतर्राष्ट्रवादी दृष्टिकोण 1955 में बांडुंग (इंडोनेशिया) में आयोजित एशिया-अफ्रीका सम्मेलन में भारत की सक्रिय भागीदारी में भी प्रतिबिंबित हुआ। यह सम्मेलन बांडुंग में अप्रैल 18-24, 1955 को आयोजित किया गया और इसमें दो महाद्वीपों से औपनिवेशिक युग के बाद के नेताओं की पहली पीढ़ी से संबंधित 29 राष्ट्र प्रमुख सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन का उद्देश्य उस समय विद्यमान वैश्विक समस्याओं की पहचान करना, उनका आँकलन करना एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में संयुक्त नीतियों का अनुसरण करना था। बड़े और छोटे राष्ट्रों के मध्य के संबंधों को नियंत्रित करने वाले सिद्धांतों को "बांडुंग के दस सिद्धांत" (Ten Principles of Bandung) के रूप में जाना गया और उस सम्मेलन में उनकी घोषणा की गई थी। बांडुंग सम्मेलन ने 1961 में गुट निरपेक्ष आंदोलन का मार्ग प्रशस्त किया।

कराची में 19 सितंबर 1960 को भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान द्वारा हस्ताक्षरित सिंधु जल संधि कूटनीतिक साधनों के माध्यम से विवादास्पद मुद्दों पर की गई प्रगति का एक जीवंत प्रमाण थी। हालांकि, भले ही भारत ने इस समय काल में वैश्विक विवाद सुलझाने के लिए पसंदीदा विकल्प के रूप में कूटनीति के प्रयोग के प्रति आस्था दर्शाई, लेकिन आवश्यकता पड़ने पर कुछ कठोर कार्रवाइयाँ भी कीं। उदाहरण के लिए, जब पुर्तगाल के अड़ियल रवैये वाले सालाजार शासन के साथ व्यापक कूटनीतिक चर्चा में गतिरोध उत्पन्न हुआ एवं भारतीय प्रधानमंत्री नेहरू को अफ्रीकी-एशियाई नेताओं के एक समूह की तीव्र आलोचना का सामना करना पड़ा, तब भारत ने 1961 में गोवा में पुर्तगालियों को उनके औपनिवेशिक विदेशी अंतःक्षेत्र (एंकलेव) से बेदखल करने के लिए बल प्रयोग करने का विकल्प चुना।

2.1.2. चीन के साथ असफलता: 1962

(Setback With China: 1962)

गुट निरपेक्षता के विचार पर आधारित विदेश नीति के प्रमुख तत्वों में से एक बढ़ते रक्षा व्यय को सीमित करना था। ऐसी नीति के पालन ने भारत की *हार्ड पावर* क्षमताओं को कमजोर कर दिया जिसका पता भारत को आगे चलकर चीनी जनवादी गणराज्य के साथ भारतीय संबंधों के परिप्रेक्ष्य में चला। भारत ने 1959 में तिब्बती आध्यात्मिक नेता दलाई लामा को शरण दी एवं 1960 में चीनी जनवादी गणराज्य के साथ विभिन्न स्तर पर वार्ताएँ विफल हो गईं। परिणामस्वरूप, सुमित गांगुली के शब्दों में कहें तो भारत ने "विवादित हिमालयी सीमा के साथ प्रादेशिक यथास्थिति पुनर्स्थापित करने के लिए अभिकल्पित की गई दबाव देने की रणनीति" अपनायी। इसमें हल्के हथियारों से लैस, अल्प सुसज्जित और थोड़ी बहुत तैयारी वाले सैनिकों को पर्याप्त आपूर्ति लाइनों के बिना अत्यधिक ऊँचाई वाले क्षेत्रों में भेजा गया। लेकिन यह रणनीति असफल सिद्ध हुई।

जब 1962 में चीन के जनवादी गणराज्य की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (PLA) ने व्यापक बल के साथ भारत पर आक्रमण किया, तो भारतीय सेना आक्रमण का सामना करने के लिए तैयार नहीं थी। पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (PLA) ने भारतीय बलों को पर्याप्त क्षति पहुँचाई। जिन क्षेत्रों में उन्होंने घुसपैठ की थी, उनमें से कुछ क्षेत्रों से वह वापस चले गए लेकिन उन्होंने 14,000 वर्ग मील से अधिक के अक्साई चीन क्षेत्र को खाली नहीं किया, जिस पर उन्होंने आरम्भ में अपना अधिकार किया था और आज भी यह चीन और भारत के संबंधों में विवाद का विषय बना हुआ है।

2.1.3. कोलंबो सम्मेलन तथा गुट-निरपेक्ष आंदोलन की सीमाएँ



(The Colombo Conference And Limits of Non-Aligned Movement)

भारत तथा चीन की स्वीकार्यता पर आधारित, छह गुट-निरपेक्ष राष्ट्र (मिस्र, बर्मा, कंबोडिया, श्रीलंका, घाना और इंडोनेशिया) 10 दिसंबर, 1962 को कोलंबो में मिले। कोलंबो सम्मेलन के परिणामस्वरूप पारित प्रस्तावों में, भारत द्वारा पीछे हटे बिना, चीन द्वारा स्वयं सीमांकित की गई युद्धविराम रेखा से 20 किमी. पीछे हटना निर्धारित किया गया। यद्यपि मध्यस्थता के प्रयासों को प्रोत्साहित किया गया, लेकिन चीन की स्पष्ट निंदा करने में विफल रहे इन छह राष्ट्रों ने भारत को बहुत निराश किया। तथापि, भारत ने प्रस्तावों को स्वीकार किया, जबकि चीन ने इन प्रस्तावों को समझौता वार्ता आरंभ करने के आधार सिद्धांत के रूप में स्वीकार किया। लेकिन अंततोगत्वा, यह पहल असफल हो गयी।

इस प्रकार, चीन के साथ 1962 के युद्ध ने भारत की विदेश नीति के प्रथम चरण का अंत किया जिसकी विशेषता आदर्शवाद थी, इसमें भारत को प्रारंभिक सफलता मिली तथा इन विरासतों को भारत आज भी अपनी विदेश नीति में पर्याप्त स्थान प्रदान करता है।

2.1.4. गुट-निरपेक्ष आंदोलन का एक संक्षिप्त विवरण

(A Brief Overview of The Non Aligned Movement)

बांडुंग के छह वर्ष पश्चात्, 1-6 सितंबर, 1961 तक बेलग्रेड में आयोजित प्रथम शिखर सम्मेलन में व्यापक भौगोलिक आधार पर गुट-निरपेक्ष राष्ट्रों के आंदोलन (NAM) की स्थापना की गई। सम्मेलन में 25 राष्ट्रों ने भाग लिया: अफगानिस्तान, अल्जीरिया, यमन, म्यांमार, कंबोडिया, श्रीलंका, कांगो, क्यूबा, साइप्रस, मिस्र, इथियोपिया, घाना, गिनी, भारत, इंडोनेशिया, इराक, लेबनान, माली, मोरक्को, नेपाल, सऊदी अरब, सोमालिया, सूडान, सीरिया, ट्यूनीशिया तथा यूगोस्लाविया।

1960 में, बांडुंग में हुए निर्णयों की सहायता से, संयुक्त राष्ट्र महासभा के 15वें सामान्य सत्र के दौरान गुट-निरपेक्ष राष्ट्रों के आंदोलन के विकास को तीव्रता प्रदान की गई, इस दौरान 17 नए अफ्रीकी एवं एशियाई राष्ट्रों ने संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता ग्रहण की। इस दौरान तत्कालीन राज्याध्यक्षों एवं शासनाध्यक्षों; मिस्र के गमाल अब्दुल नासिर, घाना के क्वामे कुमा, भारत के जवाहरलाल नेहरू, इंडोनेशिया के अहमद सुकर्णो तथा यूगोस्लाविया के जोसिप ब्रोज टीटो द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई, जो बाद में इस आंदोलन के प्रणेता और इसके प्रतीकात्मक नेता बन गए।

बांडुंग सिद्धांतों को बाद में गुट-निरपेक्षता की नीति के मुख्य लक्ष्यों तथा उद्देश्यों के रूप में अपनाया गया था। उन सिद्धांतों की पूर्ति, गुट-निरपेक्ष आंदोलन की सदस्यता के लिए एक आवश्यक मानदंड बन गई; 1990 के दशक के प्रारंभ तक इसे ("बांडुंग के दस सिद्धांत") "आंदोलन के सारतत्व" के रूप में जाना जाता था।

NAM के संस्थापकों ने इसे किसी संगठन के नौकरशाही प्रभावों से बचाने हेतु संगठन के स्थान पर एक आंदोलन के रूप में घोषित करना पसंद किया।

गुट-निरपेक्ष राष्ट्रों के "प्राथमिक उद्देश्य" निम्नलिखित थे:

- आत्मनिर्भरता, राष्ट्रीय स्वतंत्रता तथा राज्यों की संप्रभुता एवं क्षेत्रीय अखंडता का समर्थन;
- रंगभेद नीति का विरोध;
- बहुपक्षीय सैन्य समझौतों की अवमानना तथा महाशक्ति या गुट प्रभावों एवं प्रतिद्वंद्विता से गुट-निरपेक्ष राष्ट्रों की स्वतंत्रता;
- अपने सभी रूपों तथा अभिव्यक्तियों में साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष;



- उपनिवेशवाद, नव-उपनिवेशवाद, नस्लवाद, विदेशी अधिग्रहण तथा प्रभुत्व के विरुद्ध संघर्ष;
- निःशस्त्रीकरण;
- देशों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना तथा सभी राष्ट्रों के मध्य शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व;
- अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में बल के उपयोग या उपयोग की चेतावनी को अस्वीकार करना;
- संयुक्त राष्ट्र का सशक्तिकरण; अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का लोकतंत्रीकरण;
- समाजिक-आर्थिक विकास तथा अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक प्रणाली का पुनर्गठन; साथ ही समानता के आधार पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग।

2.2. 1962-1991: आत्मनिर्भरता या स्वावलंबन दृष्टिकोण का दौर

(1962-1991: Period of Self Help Approach)

चीन युद्ध के परिणामस्वरूप, नेहरू को अपने ही राष्ट्र में आलोचना का सामना करना पड़ा, हालांकि उस समय घरेलू राजनीति में कोई भी उनसे अधिक प्रभावशाली नेता नहीं था। इस प्रकार, पराजय के पश्चात् भारत के दृष्टिकोण में परिवर्तन भी उनके अधीन ही आरंभ हुआ। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत ने सैन्य आधुनिकीकरण का महत्वपूर्ण कार्यक्रम आरंभ किया। यह कार्यक्रम में दस नई माउंटेन डिवीजनों के साथ 10 लाख सैनिकों वाली सेना का निर्माण करना था, जो अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों में युद्ध के लिए तैयार हो। साथ ही इसके अंतर्गत सुपरसोनिक विमान वाले 45-स्क्वाड्रन से सुसज्जित वायु सेना और नौसेना के सामान्य विस्तार हेतु भी प्रतिबद्ध व्यक्त की गयी।

1964 में नेहरू के निधन के पश्चात् प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के कार्यकाल के दौरान भी भारत ने गुट-निरपेक्षता की नीति का औपचारिक रूप से परित्याग नहीं किया। परिणामस्वरूप, बातचीत तथा आदर्शों के स्तर पर गुट-निरपेक्षता भारतीय विदेश नीति की एक विशेषता बनी रही। हालांकि, भारत ने अपनी विदेश नीति के विविध अभिप्रायों में उत्तरोत्तर अधिक यथार्थवादी आधार ग्रहण किया।

इस चरण में एशिया में शीत युद्ध की काली छाया ने भारत को भी प्रभावित किया। इसी काल में पाकिस्तान, संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) द्वारा समर्थित सुरक्षा पहलों, जैसे 1954 में साउथ-ईस्ट एशिया ट्रीटी ऑर्गनाइजेशन (SEATO) और 1955 में सेंट्रल ट्रीटी ऑर्गनाइजेशन (CENTO) से जुड़ गया। संयुक्त राज्य अमेरिका ने पाकिस्तान को अस्त्र-शस्त्र भी प्रदान किए। 1962 के युद्धोपरांत भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के मध्य अल्प-अवधि के लिए सैन्य सहयोग रहा परन्तु वियतनाम युद्ध में अत्यधिक व्यस्त हो जाने के कारण 1965 के भारत-पाकिस्तान द्वितीय युद्ध के पश्चात् संयुक्त राज्य अमेरिका ने दक्षिण एशिया से अपने कदम पीछे खींच लिए। 1965 के युद्ध के दौरान अमेरिका ने दोनों राष्ट्रों को सैन्य सहायता प्रदान करने पर रोक लगा दी। उपमहाद्वीप से अमेरिका के परे हट जाने के बाद, भारतीय शक्ति को संतुलित करने के लिए पाकिस्तान को पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (PRC) के साथ अपने सुरक्षा सहयोग के दायरे का विस्तार करने की आवश्यकता महसूस हुयी। इसने भारत के दो प्रमुख प्रतिद्वंद्वियों के मध्य सुरक्षा गठबंधन बनने में योगदान दिया।

दूसरी ओर, PRC के साथ अपने संबंधों में आने वाले मतभेदों को देखते हुए तथा उपमहाद्वीप में अपने प्रभाव का विस्तार करने के अवसर के रूप में रूस (USSR) ने 1966 में भारत और पाकिस्तान के मध्य ताशकंद समझौते में मध्यस्थता की।

इस चरण में, 1966 में जॉनसन प्रशासन के तहत वियतनाम युद्ध की आलोचना करने, कृषि नीति तथा बाजारों को खोलने को लेकर दबाव को छोड़कर, अमेरिका कमोबेश भारत की चिंताओं से अनजान हो रहा।